Sahitya Manthan
A Peer-Reviewed, Open Access e-journal
ISSN: 2582 6867, Website: http://www.sahityamanthan.in
Year-2, Issue-8, Continuous Issue-14, July-August 2022

स्वतंत्रता संग्राम के नद के वीर भगीरथ बैकुंठ शुक्ल।

भारत वर्ष का यह सौभाग्य रहा है कि यह धरती रत्न गर्भा रही है। इस धरती पर अनेकों वीर पुत्रों ने जन्म लिया है जो भारत माता की स्वाधीनता के लिए स्वयं को भी आहूत करने से भी नही चुके है। उनमें से ही एक नाम आता है बैकुंठ शुक्ल का। स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में 23 मार्च 1931 काला दिवस के रूप में दर्ज है। इस दिन शहीद भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरु को फांसी दी गई थी। कुछ समय बाद इस मुकदमे के मुखबीर फजींद्र नाथ घोष की हत्या के आरोप में स्वतंत्रता सेनानी बैकुंठ शुक्ल को फांसी की सजा सुनाई गई। 24 वर्षीय बैकुंठ शुक्ल भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बिहार के प्रथम क्रांतिकारी थे जिन्हे फांसी दी गई। देश के वीर सपूत बैकुंठ शुक्ल का जन्म 1910 ईस्वी में बिहार के मुजफ्फरपुर (वर्तमान में वैशाली जनपद) के जलालपुर गांव में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा - दीक्षा जलालपुर में ही हुई। बाद में वह मथुरापुर गांव स्थित प्राथमिक विद्यालय में अध्यापन करने लगे। क्रांतिकारी विचारधारा होने के कारण इनका अध्यापन में मन नहीं रमा। इसी बीच काशी से इनका संपर्क चंद्रशेखर आज़ाद से हुआ। चंद्रशेखर आजाद ने इनसे पूछा कि ढोओगे या धो ओगे ? तो बैकुंठ शुक्ल ने कलंक को धोने का निर्णय लिया। फणिंद्रनाथ का ससुराल बेतिया में था। वह बिहार में बंगाल अनुशीलन समिति के सदस्य थे। वह लाहौर, मोतिहारी और पटना षडयंत्र कांड में क्रांतिकारियों के विरुद्ध गवाही देकर मुखबिर बन गए थे। इससे क्रांतिकारियों के मन में फणींद्र के प्रति गहरा आक्रोश व्याप्त हो गया। बैकुंठ शुक्ल और उनके साथी छपरा के राम विनोद सिंह ने अन्य क्रांतिकारियों के साथ मिलकर कुछ सरकारी पदाधिकारियों की हत्या की योजना मधुबनी के नरप नगर नामक स्थान पर बनाई। यही पर फणींद्र नाथ घोष की हत्या की योजना को अंतिम रूप दिया गया। बैकुंठ शुक्ल और उनके साथी चंद्रमा सिंह ने 9 नवंबर 1932 को बेतिया के मीना बाजार स्थित एक दुकान पर खुखरी से फणींद्र की हत्या कर दी। घटना स्थल पर दोनों क्रांतिकारियों का कुछ सामान पुलिस द्वारा बरामद किया गया। जिसके आधार पर पुलिस उन तक पहुंच गई। 1933 में बंगाल के क्रांतिकारी प्रवत चक्रवर्ती की गिरफ्तारी के दौरान पुलिस को एक डायरी मिली। जिसमें कुछ नामचीन क्रांतिकारियों के नाम थे। उनमें बैकुंठ शुक्ल का भी नाम शामिल था। इससे पुलिस का शक पुख्ता हो गया कि फणींद्र की हत्या बैकुंठ शुक्ल और चंद्रमा सिंह के द्वारा ही की गई है। 6 जुलाई 1933 को बैकुंठ शुक्ल मोकामा स्टेशन के समीप गिरफ्तार कर लिए गए। गया जेल जाते समय गाड़ी में पंडित नेहरू और राजेंद्र बाबू ने इनसे पूछा कि कैसे हो ? तो उन्होंने कहा कि - तीन पौंड वजन बढ़ गया है। गया जेल प्रवास के दौरान उनके सेल के बगल में बंगाल से देशभक्त विभूति भूषण दास गुप्त भी थे। फांसी से एक दिन पूर्व रात्रि में बैकुंठ शुक्ल जी ने टूटी - फूटी बांग्ला भाषा में विभूति बाबू से अनुरोध किया कि एक बार खुदीराम बोस का फांसी वाला गीत गाइए न दादा (हांसी - हांसी परब फांसी)। विभूति दा विभोर होकर गाने लगे, क्योंकि एक और खुदीराम उस खुदीराम का गीत सुनने को व्यग्र था। प्राणोत्सर्ग के लिए उत्सुक बैकुंठ शुक्ल की संवेदना जागृत हो उठी। उन्होंने पुनः विभूति दा से अनुरोध किया - दादा एक बार अपनी बांसुरी बजाईए। जेल के यातनापूर्ण संसार में इस बांसुरी का भी अपना विशेष महत्व था। दिया सलाई की खाली डिब्बी और पतले कागज के टुकड़ों के मेल से जो स्वरूप बनता था उसे बांसुरी की संज्ञा दी जाती थी। विभूति बाबू बांसुरी में बिस्मिल के गीत - सरफरोसी की तमन्ना गाने लगे। जेल में रात के सन्नाटे में यह हृदयस्पर्शी गीत सुनकर सभी द्रवित होते रहे। सरकारी गवाह बने गद्दार फणींद्र नाथ घोष की बेतिया के मीना बाजार में मौत के घाट पहुंचाकर भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरु की मौत का बदला लेने वाले बैकुंठ शुक्ल को फांसी देने के वक्त गया जेल का सरकारी जल्लाद भी मानो ठिठक गया था। जेल के सुप्रीटेंडेंट मिस्टर परेरा रुमाल हिलाकर बार - बार संकेत दे रहे थे, पर जल्लाद से

लिवर नही खींचा जा रहा था। बैकुंठ शुक्ल जी ने जब जोर से कहा कि - देर क्यों करते हो ? तो उनकी तंद्रा भंग हुई और उसने लिवर खींचा। उस दिन पूरे जेल में सन्नाटा छाया रहा। किसी ने भी भोजन नहीं किया। जेल का कोई कर्मचारी रोए बिना नहीं रह सका। फांसी के दिन सुबह 5 बजे जब जेल के 15 नंबर वार्ड से बैकुंठ शुक्ल फांसी स्थल की ओर जा रहे थे तो उनका आखरी वक्तव्य था - " अब चलता हूं, मैं फिर आऊंगा, अभी देश आजाद नही हुआ, वन्दे मातरम्। " मेरी माता के सिर पर ताज है कहते हुए 14 अप्रैल 1934 (सोमवार) को गया में बैकुंठ शुक्ल फांसी के तख्ते पर हँसते - हँसते शहीद हो गए। इस घटना से सम्पूर्ण देश में जागृति की लहर फैल गई। सभी प्रमुख समाचार पत्रों में (तत्कालीन) ने प्रथम पृष्ठ पर इस घटना को प्रकाशित किया। यधपि यह घटना मुजफ्फरपुर (वर्तमान वैशाली जनपद) की थी, लेकिन बिहार में 15 फरवरी 1934 को आए भूकंप से कही ज्यादा झकझोरने वाली थी। बैकुंठ शुक्ल जी की धर्मपत्नी राधिका देवी ने जीवन संगिनी का कर्तव्य निभाते हुए उसी पथ पर चलती रही। और आजीवन अपने पति की विचारधारा के साथ जुड़ी रही। बैकुंठ शुक्ल ने देश की स्वतंत्रता के लिए अपना बलिदान सहर्ष स्वीकार किया और संग्राम के साथ आने वाली स्वतंत्रता रूपी इमारत के मजबूत नीव बने। भारत वर्ष को गुलामी की जंजीर से मुक्ति हेतु भगीरथ प्रयास करने वाले भारत वर्ष के वीर सपूत को मेरा नमन।

संदर्भ सूची :-

1. स्वतंत्रता सेनानी क्रांतिकारी बैकुंठ शुक्ल का मुकदमा (संपादक - चंद्रकिशोर शुक्ल)
2. सेई मधवर्षार गंगाजल (लेखक - विभूति भूषण दास गुप्त)
3. सरफरोशी की तमन्ना (लेखक - विभूति भूषण दास गुप्त)

- डा . मीनाक्षी मीनल, प्रदेश सचिव
अखिल भारतीय साहित्य परिषद बिहार
मुजफ्फरपुर बिहार, संपर्क - ९७९८८९७५२